कृषि संदेश

गेहूँ एवं जौ अनुभाग

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

गेहूँ

गेहूं हरियाणा प्रदेश की एक महत्वपूर्ण खाधन्न फसल है किसान भाइयों गेहूं की अधिक पैदावार लेने के लिए उचित किस्म, वैज्ञानिक सस्य क्रियाएं एवं उचित खाद की मात्रा का प्रयोग करके कम खर्चे में अधिक उत्पादन ले सकते हैं

बिजाई का समय:

1. **अगेती बिजाई:** अक्टूबर के अंतिम सप्ताह से नवंबर के पहले सप्ताह तक (25 अक्टूबर- 05 नवंबर)
2. **समय की बिजाई:** नवंबर के पहले सप्ताह से नवंबर के तीसरा सप्ताह तक (01 नवंबर- 25 नवंबर)

बिजाई की विधि:

गेहूं की विजय बिजाई एवं उर्वरक ड्रिल से करें. बीज की गहराई लगभग 5 सेंटीमीटर एवं पंक्ति से पंक्ति की दूरी 20 सेंटीमीटर होनी चाहिए

अनुमोदित किस्मे:

1. **अगेती बिजाई, सीमित सिंचाई एवं कम खाद वाली गेहूं की उन्नत किस्मे:** WH 1402, WH 1142, WH 1080, PBW 644, NIAW 3170, DBW 296, HI 1653, HD 3369
2. **अगेती बिजाई, सिंचित एवं अधिक खाद वाली गेहूं की उन्नत किस्मे:** WH 1270, DBW 187, DBW 303, DBW 327, DBW371, DBW 372, PBW 872
3. **सिंचित एवं समय की बिजाई वाली गेहूं की उन्नत किस्मे:** WH 1105, WH 1184, DBW 222, DBWH 221, HD 3086, PBW 826, HD 3386

बीज की मात्रा: अगेती एवं समय की बिजाई के लिए 40 किलोग्राम/ एकड बीज का प्रयोग करे

बीज उपचार:

1. दीमक से बचाव के लिए 60 मि.ली. क्लोरपाईरीफास 20 EC या 200 मि.ली. ईथियोन 50 EC (फासमाइट 50%) 60 मि.ली. को पानी में मिलाकर 2 लीटर घोल बनाकर 40 किलोग्राम बीज को उपचारित करें
2. खुली कांगीयारी व पत्तियों की कांगीयारी से बचाव के लिए वीटावैक्स या बाविस्टिन 2 ग्राम या टेबुकोनाज़ोल (रक्सिल 2 DC) 1 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से सुखा उपचार करें

3. जैविक खाद उपचार के लिए 200 मि.ली. एजोटोबैक्टर व 200 मि.ली. फॉस्फोरस टीका (पी.एस.बी) प्रति 40 किलोग्राम बीज के लिए प्रयोग करें

मोल्या रोग का प्रबंधन:

- सूत्रकृमि ग्रस्त खेत में (सरसों, चना, मेथी, सब्जी वाली फसलें आदि) उन्हें फसल चक्र में उगाये ।
- 15 नवम्बर से पहले-पहले गेहूँ की बिजाई पूरी कर लें।
- मोल्या बीमारी प्रभावित खेतों में गेंहू की सूखे में बिजाई करके तुरंत सिंचाई करें।
- अधिक संक्रमण वाले क्षेत्र में कार्बोफ्यूरान 3 जी (13 किलोग्राम) प्रति एकड़ की दर से बिजाई के समय उपयोग करें ।
- एजोटोबेक्टर क्रोकोम (HT-54) या एजोटीका का 50 मि. ली. प्रति 10 किलोग्राम बीज की दर से बीज उपचार करें ।इसके उपरान्त बीज को छाया में सुखाएं ।

खाद:

1. अगेती बिजाई एवं अधिक खाद पानी वाली किस्मो में क्रमश: शुद्ध नाइट्रोजन फास्फोरस पोटाश की मात्रा 90:36:24 किलोग्राम प्रति एकड़ डालें, इसके लिए 75 किलोग्राम डी.ए.पी, 165 किलोग्राम यूरिया व 30 किलोग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश प्रति एकड़ डालें
2. समय की बिजाई एवं सिंचित दशा में क्रमश: शुद्ध नाइट्रोजन फास्फोरस पोटाश की मात्रा 60:24:12 किलोग्राम प्रति एकड़ डालें, इसके लिए 50 किलोग्राम डी.ए.पी व 110 किलोग्राम यूरिया अथवा 150 किलोग्राम सिंगल सुपरफास्फेट व 130 किलोग्राम यूरिया, 20 किलोग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश प्रति एकड़ डालें

पानी:

पहली सिंचाई बिजाई के 20-25 दिन बाद शिखर जड़ निकालने की अवस्था पर बहुत आवश्यक है

अधिक जानकारी के लिए निम्नलिखित नंबरों पर संपर्क करें

9416397736 9813078155 9416961183

जौ

जौ उत्तर भारत में एक महत्वपूर्ण रबी फसल है। जौ का विश्व में चावल, गेहूँ एवं मक्का के बाद चौथा स्थान है। हमारे देश में जौ की खेती मुख्यतः राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, हरियाणा व पंजाब में की जाती है। जौ की खेती के लिए कम निवेश की जरूरत होती है। जौ की खेती विपरीत परिस्थितियों जैसे बारानी, लवणीय/क्षारीय, मोलयाग्रस्त भूमि एवं कम उपजाऊ भूमि पर उत्पादन के लिए अन्य रबी फसलों के मुकाबले अधिक सक्षम है।

बिजाई का समयः

जौ की बिजाई 15 से 30 नवम्बर के बीच कर लें। माल्ट जौ की किस्में विशेषतया बी एच 885 की बिजाई 10 से 25 नवम्बर के बीच कर लें।

बीज की मात्राः

अच्छी पैदावार के लिए सिंचित स्थितियों में 35 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ डालें। द्वि–पंक्ति माल्ट जौ की किस्म बी एच 885 की बिजाई के लिए 40 किलोग्राम प्रति एकड़ बीज का प्रयोग करें। **यदि बुवाई देरी से करनी है तो बीज की मात्रा में 15 से 25 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी कर देनी चाहिये।**

बीज का उपचार :

बीज से पैदा होने वाली बिमारियों पर नियंत्रण के लिए बीज उपचार आवश्यक है। दीमक की रोकथाम के लिए 600 मि.ली. क्लोरपायरीफास 20 ई.सी. को पानी में मिलाकर कुल 12.5 लीटर घोल बना ले और इससे 100 कि.ग्रा. बीज का उपचार करें। खुली कांगियारी एवं बंद कंगियारी के बचाव के लिए वीटाबेक्स या बाविस्टिन 2 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से उपचार करें।

बुवाई की विधिः

बिजाई पलेवा करके ही करनी चाहिये तथा पंक्ति से पंक्ति की दूरी 22.5 सेंटीमीटर एवं देरी से बुवाई की स्थिति में पंक्ति से पंक्ति की दूरी 18 सेंटीमीटर रखनी चाहिये। बीज को 4 से 5 सेंटीमीटर की गहराई पर डालें अधिक गहराई पर डालने से जमाव कम एवं देर से होता है। **जौ की बुआई बीज ड्रील से** करनी चाहिये।

खाद एवं उर्वरक :

उर्वरक हमेशा मिट्टी जांच के आधार पर डालें। खादों का सन्तुलित प्रयोग होना चाहिए। आम सिफारिश के आधार पर सिंचित फसल के लिए 24 कि.ग्रा. नत्रजन, 12 कि.ग्रा. फास्फोरस व 6 कि.ग्रा. पोटाश प्रति एकड़ डालना चाहिए। यदि द्वि–पंक्ति माल्ट जौ की किस्म है तो खाद की मात्रा 36 कि.ग्रा. नत्रजन, 16 कि.ग्रा. फास्फोरस व 8 कि.ग्रा. पोटाश प्रति एकड़ डाले। सिंचित फसल में फास्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा तथा नत्रजन की आधी मात्रा बिजाई के समय डालें और बची हुई आधी नत्रजन पहली सिंचाई के बाद डालें। जस्ते की कमी वाली भूमि में 10 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट प्रति एकड़ की दर से डालना चाहिए।

अनुमोदित किस्में:

जौ की खेती से अधिकतम उत्पादन प्राप्त करने के लिए किसानों को अपने क्षेत्र की प्रचलित और अधिक उपज देने वाली **रोग** रोधी किस्मों का चयन करना चाहिए। कुछ प्रचलित और उन्नत किस्में इस प्रकार है:

सिंचित व समय से बुआई: बी एच. 946, बी एच. 393, बी एच. 902, डी डब्लू आर बी. 137

असिंचित व समय से बुआई: आर डी. 2508, आर डी. 2624, आर डी. 2660

क्षारीय एवं लवणीय: आर डी. 2907, आर डी. 2794

माल्ट जौ : बी एच. 885, डी डब्लू आर बी. 101, आर डी. 2849, डी डब्लू आर बी. 160

चारा के लिए: आर डी. 2715, आर डी. 2552

अधिक जानकारी के लिए निम्नलिखित नंबरों पर संपर्क करें

9416320888 **9416961183**